Final Year Examination of the Three-year Degree Course, 2001
(मुख्य परीक्षा)
(Faculty of Humanities)
HINDI LITERATURE
Paper - II
(आलोचना एवं निबन्ध)

Time : Three Hours
Maximum Marks : 100

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) जब तक साहित्य का काम केवल मन-बहलाव का सामान जुटाना, केवल लोरियाँ गा-गाकर सुलाना, केवल आँसू बहाकर जी हल्का करना था, तब तक इसके लिए कर्म की आवश्यकता न थी। वह एक दीवाना था जिसका गम दूसरे खाते थे; मगर हम साहित्य को केवल मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं समझते। हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा, जिसमें उच्च चिन्तन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाईयों का प्रकाश हो - जो हममें गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाये नहीं, क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।

अथवा

ज्ञान तो अखण्ड माना गया है फिर विज्ञान के नाम पर यह वितण्डावाद क्यों किया जाता है? जान पड़ता है यह पश्चिम के सभ्यता शिखर पर पहुंचे समाज के ज्ञानातिरेक की उपज है! इसे बुद्धि अजीर्ण कहने को भी जी होता है। किसी स्वस्थ्य और विकासोन्मुख समाज के लिए बुद्धि का इतना विराट परिचालन न तो संभव है, न आवश्यक या उपयोगी ही। इसलिए पश्चिम के अस्ताचलगामी सूर्य से प्रकाश लाने की साधना हमें छोड़ ही देनी चाहिए। कितना आश्चर्य है कि साहित्य के सरल विकास क्रम को समझने के लिए कितने अनोखे और परस्पर विरोधी 'तत्वज्ञानों' का उद्‌भव और प्रयोग किया जा रहा है! 10

(ख) आज का जीवन सर्वथा विश्रृंखलित और अव्यवस्थित है; जीवन-मूल्यों की इतनी भयंकर अराजकता पहले शायद ही कभी सामने आई हो। राजनीतिक और आर्थिक दुर्व्यवस्था के साथ सांस्कृतिक और दार्शनिक उलझनों ने मिलकर जीवन में अगणित गुत्थियाँ डाल दी है - जिनमें कि आज का विचारक फंस कर रह जाता है। इस प्रकार के राजनैतिक विप्लव तो पहले भी आये, परन्तु मानव-चेतना पर उनका इतना सर्वव्यापि प्रभाव नहीं पड़ा। पर आज तो जैसे समाज और सभ्यता का आधार ही भंग हो गया है।

अथवा

किसी भी युग में आदर्श और यथार्थ या स्वप्न और सत्य कुरूक्षेत्र के उन दो विरोधी पक्षों में परिवर्तन करके नहीं खड़े किये जा सकते, जिनमें से एक युद्ध की आग में जल गया और दूसरे को पश्चाताप के हिम में गल जाना पड़ा। वे एक दूसरे के पूरक रह कर ही जीवन को पूर्णता दे सकते है। अत: काव्य उन्हें विरोधियो की भूमिका देकर जीवन में एक नयी विषमता उत्पन्न कर सकता है, सामंजस्य नहीं। न यथार्थ का कठोरतम अनुशासन आदर्श के सूक्ष्म चित्राधार पर कालिमा फेर सकता है, और न आदर्श का पूर्णतम विधान यथार्थ को शून्य आकाश बना सकता है। 10

(ग) जीवन के पीछे झाँककर देखें तो घटनाएँ विचित्र प्रकार की कहानियाँ सुनाने लगती है। घटनाएँ मानो वह दर्शन है जो उदाहरणों में उतर कर बिना जीभ के बोलती है। घटनाओं का दर्शन यह है कि वे परिस्थितियों का पता देती हुयी शताब्दियों तक बोलती रहती है और कभी नहीं थकती; मानो लोकरूचि, स्वभाव, जीवन के उतार-चढ़ाव, हानि-लाभ और दु:ख-सुख दूसरे प्रकार से कहे ही नहीं जा सकते; ताने पुराना जमाना जानकारी में प्रवेश करने का नया दरवाजा है।

अथवा

आसमान में निरन्तर मुक्का मारने में कम परिश्रम नहीं है और मैं निश्चित जानता हूँ कि रहस्यवादी आलोचना लिखना कुछ हँसी-खेल नहीं है। पुस्तक को छुआ तक नहीं और आलोचना ऐसी लिखी कि 'त्रैलोक्य विकंपित:।' यह क्या कम साधना है? आये दिन साहित्यिकों के विषय में विचार होता ही रहता है और इन विचारों पर विचार लिखने वाले बुद्धिमान लोग गंभीर भाव से सिर हिलाकर कहते है- आखिर साहित्यिक कहें किसे? बहसें होती है; अखबार रंगे जाते है। 10

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com

2. पठित निबन्ध के आधार पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की निबन्ध शैली पर एक लेख लिखिए।

अथवा

'कुटज' में लेखक क्या कहना चाहता है? इस निबन्ध की विशेषताएँ अपने शब्दो में लिखिए। 15

3. रामविलास शर्मा के निबन्ध का सार लिखते हुए बताइए कि तुलसी साहित्य के सामन्त विरोधी मूल्य कौन-कौन से है।

अथवा

'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' में लेखक के मन्तव्य को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। 15

4. ललित निबन्ध संग्रह में सर्वाधिक महत्वपूर्ण निबन्ध आपको कौन-सा लगा? सकारण उत्तर लिखिए।

अथवा

'सपेन मैने भी देखे है' निबन्ध का सार लिखते हुए अज्ञेय की निबन्ध शैली की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

5. हिन्दी आलोचना के उद्‌भव एवं विकास पर एक लेख लिखिए।

अथवा

किन्हीं दो समीक्षकों के हिन्दी आलोचना में योगदान का वर्णन कीजिए। 15

6. हिन्दी भाषा का परिचय देते हुए उसकी विभाषाओं का संक्षिप्त स्वरूप बताइये।

अथवा

खड़ी बोली या राजस्थानी की भाषा सम्बन्धी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 10

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com